कहानी

हमसफ़र

महेन्द्र तिवारी

दिल्ली में कड़ाके की सर्दी चल रही थी. जनवरी की सुबह कुछ ऐसी थी कि सूरज भी अपनी रजाई से बाहर निकलने में नखरे कर रहा था. जनकपुरी मेट्रो पर खड़ी आरुषि, जिसे इलाके के लोग नाम से कम और वो हँसती हुई लड़की के नाम से ज़्यादा जानते थे.

उसका रोज़ का रूटीन फिक्स था, जनकपुरी वेस्ट मेट्रो स्टेशन से ब्लू लाइन पकड़ना. अक्सर उसके दोस्त उसके साथ होते, कभी कोई पुरानी याद ताज़ा होती, तो कभी ऑफिस की गॉसिप. आरुषि अपनी ज़िंदगी के हर पल को लार्जर दैन लाइफ़ अंदाज़ में जी रही थी. लेकिन उसे क्या पता था कि ब्लू लाइन के एक साधारण से सफ़र में उसकी ज़िंदगी का सिग्नल बदलने वाला है. उसके साथ उसके जिगरी दोस्तों का काफिला था. मिस्टी और रॉकी स्कूल के ज़माने के वो दोस्त थे जिन्हें आरुषि के हर सीक्रेट का पता था. प्रीति, जो कॉलेज की याद ताजा रखती थी और जिसका फोन हमेशा 45 डिग्री के एंगल पर सेल्फी मोड में रहता था और अभय, ऑफिस का वो साथी जो काम कम और चुटकुले ज़्यादा बांटता था. कोच के अंदर पैर रखने की जगह नहीं थी. मेट्रो के अंदर का नज़ारा किसी युद्ध क्षेत्र से कम नहीं था. लेकिन आरुषि की गैंग ने अपना एक कोना सुरक्षित कर लिया था. रॉकी ने माहौल को गर्माते हुए कहा, दोस्तों, मेट्रो में लड़की से बात करने का निंजा टेक्निक बताऊं? बस पास जाकर धीरे से कहो - एक्सक्यूज मी, आपकी स्माइल इतनी ब्राइट है कि मेट्रो की लाइट्स शर्मा गई हैं!

पूरी गैंग के ठहाकों से कोच गूँज उठा. पास खड़े एक अंकल ने चश्मा ठीक करते हुए उन्हें ऐसे घूरा जैसे उन्होंने मेट्रो की सीट नहीं, बल्कि उनकी ज़मीन हड़प ली हो. प्रीति ने तुरंत फोन निकाला, गाइज़, पोज! ये रील तो वायरल होगी. कैप्शन -%मेट्रो मस्ती विद द बेस्टीज़.

आरुषि की ज़िंदगी एक सेट पैटर्न पर चल रही थी. कनॉट प्लेस में एक मल्टीनेशनल कंपनी में मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव की जॉब थी. सुबह नौ से शाम छह की भागदौड़ और क्लाइंट्स के नखरे. उसके मम्मी-पापा जनकपुरी से फोन पर रोज़ एक ही राग अलापते -बेटी, अब 26 की हो गई है, कोई अच्छा लड़का देख ले, शादी की उम्र निकली जा रही है. और आरुषि का एक ही जवाब होता, पापा, पहले करियर की मेट्रो पटरी पर आ जाए, फिर दूल्हा भी देख लेंगे.

आरुषि अपनी धुन में मगन थी. वह फोन पर अपनी सहेली को बता रही थी कि कैसे उसके बॉस ने उसे संडे को भी ईमेल कर दिया. यार, ये बॉस लोग अपनी बीवियों से झगड़कर सारा गुस्सा हम पर क्यों निकालते हैं?

तभी मेट्रो राजौरी गार्डन पहुँची. दरवाज़े खुले और भीड़ का एक नया रेला अंदर आया. इसी धक्का-मुक्की में एक लड़का, जो शायद किसी दूसरी दुनिया से आया लग रहा था, आरुषि से ज़ोर से टकराया. लंबा कद, हल्की दाढ़ी, हाथ में लैपटॉप बैग और आँखों में चमक थी. वह लड़का मुस्कराया, ऐसी मुस्कान जो सीधे दिल पर दस्तक दे गया. सॉरी मैम!

आरुषि पलटी. लेकिन गुस्सा वहीं पिघल गया. कोई बात नहीं. लड़का हँस पड़ा. मैं विराज. सॉफ्टवेयर इंजीनियर. गुरुग्राम में जॉब. आप?

आरुषि. पीछे से रॉकी ने कोहनी मारी, भाई साहब, थोड़ा स्पेस! हमारी आरुषि वीआईपी है, इसका इंश्योरेंस महंगा है!

विराज ने हाथ जोड़ लिए, माफ़ करना दोस्त, मैं तो बस सिस्टम चेक कर रहा था. मेट्रो अब राजौरी गार्डन से आगे बढ़ चुकी थी. विराज और आरुषि के बीच बातों का सिलसिला ऐसे शुरू हुआ जैसे दो पुराने बिछड़े हुए रिश्तेदार मिल गए हों. आधे घंटे के सफ़र में दोनों की दुनिया सिमट आई थी.

आरुषि ने उसे अपने स्कूल के वो किस्से सुनाए जब उसने क्लास बंक की थी, अपने कॉलेज के उन दोस्तों के बारे में बताया जो आज भी उसे ड्रामा क्वीन कहते हैं.

विराज ने कहा, लाइफ भी कोडिंग जैसी है. एक सेमी-कोलन गलत और सब क्रैश. आरुषि हँसी, उसने पलटकर जवाब दिया, और मार्केटिंग? वहां तो हम एरर को भी यूनिक फीचर बताकर बेच देते हैं. बॉस कहता है - टारगेट अचीव करो, चाहे दुनिया इधर की उधर हो जाए.

जैसे-जैसे मेट्रो करोल बाग पार कर रही थी, आरुषि को महसूस हुआ कि विराज के साथ बिताया गया ये आधा घंटा उसके सालों के दोस्तों के साथ बिताए वक्त से ज़्यादा भारी पड़ रहे थे. विराज उसे टोक नहीं रहा था, बल्कि उसे सुन रहा था. वह उसकी उन बेमतलब की बातों पर भी हंस रहा था जिन पर आरुषि खुद कभी-कभी शर्मिंदा हो जाती थी.

आरुषि महसूस कर रही थी कि उसके पास दोस्त तो बहुत हैं, लेकिन विराज जैसा हमसफ़र कोई नहीं. आरुषि को पता चला कि विराज जितना गंभीर दिखता है, उतना ही गहरा भी है.उधर आरुषि के दोस्तों ने व्हाट्सएप ग्रुप पर हंगामा मचा दिया था. रॉकी- अलर्ट! नया कैरेक्टर एंटर. संभावित दूल्हा! शादी का कार्ड प्रिंट करवाऊं क्या?

मिस्टी- आरुषि के चेहरे की लाली देखो, ये सर्दी से नहीं, शर्माने से है! उस दिन मंगलवार था. अब आर.के.आश्रम मार्ग स्टेशन आने वाला था. आरुषि का दिल किसी ढोल की तरह बज रहा था. उसने सोचा कि अगर आज नहीं कहा, तो शायद ये हमसफ़र अगले स्टेशन पर उतर जाएगा और फिर कभी नहीं मिलेगा. उसने हिम्मत जुटाई और विराज का हाथ हल्के से छुआ. विराज ने उसकी तरफ देखा. आरुषि ने सीधे उसकी आँखों में झाँका और कहा, विराज मुझे लगता हैज् मैं तुम्हें चाहने लगी हूँ. आई लव यू. विराज चौंक गया, लेकिन उसके चेहरे पर एक सुकून भरी मुस्कान थी. आरुषि रुकी नहीं, उसने आगे बढ़कर ज़िद की, अब चुप मत रहो. मुझे भी वही सुनना है. बोलो न, आई लव यू !विराज ने एक गहरी सांस ली, चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान लाई और बोला, अरे आरुषि, ठीक है, कह देंगे. लेकिन कोई उचित अवसर तो आने दो. इतनी जल्दी क्या है? हमारे यहाँ बड़े - बुजुर्ग कहते हैं—सब्र का फल मीठा होता है! आरुषि, जो भावनाओं के उफान पर थी, इस दार्शनिक जवाब से झुंझला गई. उसने पैर पटकते हुए कहा, अरे कोई मीठा-वीठा नहीं होता! ये सब पुरानी बातें हैं. मुझे अभी सुनना है! पूरा कोच शांत हो गया. विराज उसकी मासूमियत और झुंझलाहट देख जोर-जोर से हंसने लगा. उसकी हंसी इतनी असरदार थी कि पास खड़े अंकल, जो अब तक उन्हें घूर रहे थे, वो भी मुस्कुरा दिए. आरुषि उसे घूरती रही, पर अंदर ही अंदर वह भी उसकी हंसी पर फ़िदा हो रही थी.

आरुषि के दोस्त पीछे से हूटिंग करने लगे. रॉकी ने चिल्लाया, ये हुई न बात! डायरेक्ट प्रपोजल!

मेट्रो राजीव चौक पहुँच चुकी थी. आरुषि को यहाँ उतरना था क्योंकि उसका ऑफिस कनॉट प्लेस में था. दरवाज़े खुले, और लोगों का हुजूम बाहर निकलने लगा. आरुषि ने उतरते वक्त मुड़कर विराज को देखा. वह अब भी मुस्कुरा रहा था.

'एक पुराना मौसम लौटा' मानो भावनाओं का सुकून भरा संसार

भावेश कानूनगो

पुस्तक चर्चा

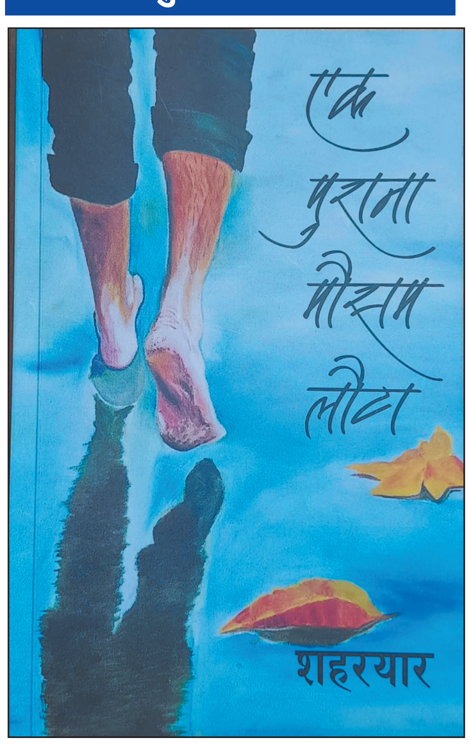

युवा कवि शहरयार का पहला कविता-संग्रह 'एक पुराना मौसम लौटा' हाथ में आते ही अपनी सादगी और भावनात्मक गहराई से पाठक को मुग्ध कर देता है. इस संग्रह की पहली ही कविता पढ़ते हुए ऐसा लगता है, जैसे यह सीधे दिल की गहराइयों से निकली हो. यह संग्रह केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि कवि हृदय की सच्ची और सीधी अनुभूतियों का जीवंत दस्तावेज़ है. इसमें कवि ने प्रेम को पूरी मानवीय उदात्तता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है.

इस संग्रह को समझने-परखने से अधिक महसूस किया जाना चाहिए, यदि आपने कभी अपने जीवन में प्रेम का अनुभव किया है तो ये रचनाएँ आपके अंतर्मन के बेहद निकट पहुँच जाती हैं. और इन्हें पढ़ते हुए आप इनसे एक तरह का तादात्म्य बना लेते हैं. धीरे-धीरे ये कविताएँ हमें अपने आसपास की लगने लगती है. संग्रह की अधिकाँश कविताएँ पाठक को उस मन: स्थिति में ले जाती है, जहाँ वह खुद अपने बीते हुए प्रेमानुभवों से जुड़ने लगता है.

'एक पुराना मौसम लौटा' जैसे प्रेम में जीते हुए उसके हर लम्हे को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास है. और इसमें कवि सफल हुए हैं. प्रेम के कितने-कितने शेड्स इसमें आते-जाते महसूसे जाते हैं. प्रेम का कोई एक सरल रेखीय कोण नहीं होता, वह तो हर बार अपना एक नया कोण लेकर हमें छकाता है. इस संग्रह की तमाम कविताएँ इस बात की तस्दीक कराती हैं. कवि ने प्रेम के विभिन्न पड़ावों- 'स्पर्श की भाषा', 'प्रथम संवाद', 'विरह', और उसकी गहराई का मार्मिक और प्रभावी चित्रण किया है.

कवि का पहला संग्रह होने के बाद भी इसकी भाषा हमें चौंकाती है. इसमें उर्दू और शुद्ध हिंदी के शब्दों का सुंदर और संतुलित समन्वय है. यही भाषिक संगम हमारी साझा संस्कृति का सशक्त प्रतिबिंब बनकर उभरता है. कविताओं की भाषा सरल, सहज और सीधे हृदय को स्पर्श करने वाली है, जो पाठक को बिना किसी जटिलता के भावों की गहराई तक ले जाती है. कवि की इस आमफहम भाषा का जादू कविता के साथ भीतर उतरता है और देर तक वहीं घुला रह जाता है. कविता पाठक के अन्तस् में लम्बे समय तक ठहरी रह जाती है और यह कविता की विशेषता कही जा सकती है.

'अनजाने जंगल की ख़ुशबू' शीर्षक कविता में कवि लिखते हैं- 'तुम आती हो सामने और ठहर जाता है समय...' इन पंक्तियों में प्रेमी के सामने प्रिय के आगमन पर समय के ठहर जाने के उस जादुई क्षण को कितने प्रभावशाली ढंग से उकेरा गया है. यहाँ ख़ुशबू, साँसों के उतार-चढाव और उसके सौंदर्य का चित्रण कविता पढ़ने वाले के मन में सजीव दृश्य उपस्थित कर देता है. इसी तरह 'एक धीमी-सी धुन' कविता में यह संदेश है कि किसी वस्तु का वास्तविक मूल्य उसकी बाज़ार-कीमत से नहीं, बल्कि उससे जुड़ी भावनाओं और स्मृतियों से तय होता है. 'तुम्हारे सुख की खातिर' कविता की यह पंक्ति पूरी रचना का सार प्रस्तुत करती है- 'मेरा प्रेम दूर होकर भी, तुम्हारे पास ही रहा.' स्पष्ट है कि प्रेम शारीरिक उपस्थिति का मोहताज नहीं, बल्कि भावनात्मक समर्पण और पवित्रता का प्रतीक है. कवि ने 'ख़ामोशी' को गवाह बनाकर यह भी दर्शाया है कि कई बार जो बात शब्द नहीं कह पाते, वह मौन सहज ही अभिव्यक्त कर देता है.

शीर्षक कविता 'एक पुराना मौसम लौटा' जैसी कविताएँ इस संग्रह को एक सुकूनभरी अनुभूति प्रदान करती हैं. वे जीवन की आपाधापी के बीच प्रेम की छोटी-छोटी स्मृतियों में छिपी ख़ुशियों को खोजने की प्रेरणा देती हैं. यहाँ नॉस्टेल्जिया और रोमानियत का सुंदर संगम दिखाई देता है, जो इस कृति को प्रेम रचनाओं के लिहाज से ख़ास बनाता है. संग्रह में प्रेम की अवधारणा कई स्थानों पर दार्शनिक रूप भी धारण करती है- 'प्रेम ही है आरंभ, प्रेम ही है अंत' यह पंक्ति सूफ़ी और भक्ति परंपरा की उस धारा की याद दिलाती है, जहाँ प्रेम को ही सृष्टि का मूल तत्व माना गया है. 'जग और परलोक' का एक हो जाना इस बात का संकेत है कि प्रेमी के लिए उसका प्रेम ही उसकी संपूर्ण दुनिया बन जाता है. यह दृष्टि कविता को व्यापक और आध्यात्मिक आयाम प्रदान करती है. शिवना प्रकाशन ने इसे बड़े संजीदा ढंग से प्रकाशित किया है. फॉण्ट, काग़ज़, प्रिंटिंग हर लिहाज से यह पठनीय बन पड़ा है. इसका आवरण ही इतना सुंदर है कि देखते ही हाथ में लेने को मन करता है.

यह कवि का प्रथम संग्रह है, और इस दृष्टि से यह उम्मीदें जगाता संभावनाशील आरंभ कहा जा सकता है. मालवी कहावत है 'पूत का पाँव, पालना में ही दिख जाना '-जो यहाँ सार्थक प्रतीत होती है. 'एक पुराना मौसम लौटा' संकेत है कि आने वाले समय में शहरयार की रचनाएँ और अधिक परिपक्व, सरोकारी और हृदयस्पर्शी रूप में सामने आएँगी.

'एक पुराना मौसम लौटा' (कविता संग्रह)
शहरयार
मूल्य: 150 रुपये
प्रथम संस्करण, 2026
प्रकाशक : शिवना पेपर बैक्स, सीहोर, मप्र

लघुकथा

बेजान खम्भा

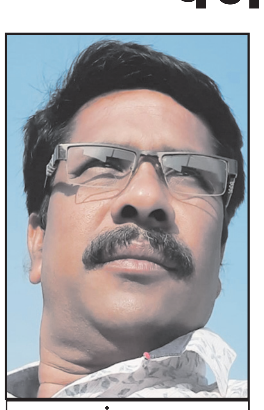

बसंत राघव

आज मंत्री जी चुनाव प्रचार के लिए आने वाले थे. गाँव के बाहर स्कूल के मैदान में एक बड़ा मंच बनाया गया था. एक तरफ मास्टर साहब थे, जो वर्षों से किताबों में सिर खपाकर समाज सुधार के लिए यहाँ चले आए थे. दूसरी तरफ गाँव का वह दबंग प्रतिनिधि खड़ा था, जिसके मुँह से निकलती देसी ठर्रे की गंध और गालियों से माहौल भारी हो रहा था.

'अबे ओ मास्टर! हमें ज्यादा कायदे मत सिखा. यह पंचायत हमारी लाठी के दम पर चलती है, तेरी किताबों से नहीं,' प्रतिनिधि ने सीना तानकर कहा.

मास्टर साहब चुपचाप सिर झुकाए खड़े थे. आस-पास खड़ी भीड़ तमाशबीन बनी यह देख रही थी. मास्टर साहब की चुप्पी उनकी सहिष्णुता थी या सरकारी नौकरी छिन जाने का डर, यह उनके चेहरे पर छलक उठे पसीने से झलक रहा था.

तभी शिक्षा मंत्री का काफिला धूल उड़ाता हुआ वहाँ रुका. मास्टर साहब की आँखों में उम्मीद की एक किरण जगी , पर वह क्षण भर में ही बूझ गई. मंत्री जी ने गाड़ी से उतरते ही अपने समर्थकों की ओर देखा, जिनके हाथ में पार्टी के प्रचार की तख्तियां थीं.

मंत्री जी ने मास्टर के कंधे पर हाथ रखा और अत्यंत मधुर स्वर में बोले, 'देखिए मास्टर साहब, आप विद्वान हैं. थोड़ा सामंजस्य बिठाना सीखिए. संस्कारों की बातें अपनी जगह हैं, पर व्यवहारिकता भी कोई चीज़ होती है.'

मंत्री की चमचमाती गाड़ी धूल उड़ाती निकल गई. धूल का वह गुबार जब प्रतिनिधि की मूँछों पर पड़ा, तो वे गर्व से और तन गईं; लेकिन मास्टर साहब की आँखों में वह रेत की तरह चुभने लगा. उनका सिर झुक गया था. अहंकार की जीत और ज्ञान की हार के बीच, वे भीड़ में एक बेजान खंभे की तरह चुपचाप खड़े रह गए.

दहेज... आखिर कब तक?

सुचिता सकुनिया

हाल ही में चर्चित त्विशा शर्मा सुसाइड केस, नोएडा की दीपिका, साक्षी... लगभग हर कुछ दिनों में किसी नवविवाहिता की मौत की खबर सामने आ जाती है. हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, चाँद पर पहुँचने की बातें कर रहे हैं, पर आज भी औरतों को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाता है, उन्हें मानसिक रूप से इतना तोड़ दिया जाता है कि वे आत्महत्या तक कर लेती हैं. पर क्या इसमें सिर्फ ससुराल वाले दोषी हैं?

मुझे लगता है कि कहीं न कहीं लड़की के माता-पिता भी अनजाने में इस व्यवस्था को मजबूत करते हैं. जब कोई घटना होती है, तब अक्सर लोग कहते हैं — 'बहुत लालची लोग थे...' 'हमने तो एक करोड़ दिए थे...' 'आलीशान शादी की थी...' 'स्कॉर्पियो दी थी...' पर मेरा सवाल है — क्यों दी? क्या लड़का कमाता नहीं था? क्या वह अपने दम पर गाड़ी नहीं खरीद सकता था? और अगर लड़की खुद पढ़ी-लिखी, आत्मनिर्भर और कमाने वाली है, तो फिर दहेज के नाम पर इतना दिखावा क्यों?

समस्या सिर्फ दहेज की रकम नहीं, उस सोच की है जहाँ रिश्तों की कीमत सामान से तय की जाती है और लड़कियों से भी एक सवाल... जो रिश्ता शुरुआत से ही लेन-देन पर टिका हो, क्या वह सच में बराबरी और सम्मान का रिश्ता कहलाने योग्य है? दहेज के सहारे बने दिखावे से बेहतर है आत्मसम्मान के साथ सादा जीवन जीना.

सबसे दुखद बात यह है कि आज भी कई मामलों में महिलाओं के ही बयान सुनने को मिलते हैं — 'वो पौधों में पानी नहीं देती थी...' 'पूजा नहीं करती थी...' 'घर के काम ठीक से नहीं आते थे...' जब एक महिला ही दूसरी महिला को अपनाने के बजाय उसे कसौटी पर तौलने लगे, तो समझ जाइए कि समाज सिर्फ आधुनिकता का दिखावा कर रहा है. अंदर से वह अब भी सदियों पुरानी सोच में जकड़ा हुआ है.

रिश्ते प्यार, सम्मान और अपनापन माँगते हैं, लेन-देन नहीं. और उन माता-पिता से हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना है — अगर दहेज में स्कॉर्पियो देने की क्षमता रखते हैं, तो बेटी के नाम एक छोटा-सा घर दे दीजिए. कम से कम उसके पास एक ऐसी जगह तो होगी जहाँ वह बिना किसी सवाल, बिना किसी ताने के वापस लौट सके.

मैंने पहले भी लिखा था —क्या शादी के बाद मायके के दरवाज़े बेटियों के लिए बंद हो जाते हैं? क्यों इतनी लड़कियाँ वापस घर लौटने के बजाय खुद को खत्म करना चुन लेती हैं? क्योंकि शायद उन्हें यह भरोसा ही नहीं दिया जाता कि 'बेटी, यह घर आज भी तेरा है. जहाँ तक संभव हो रिश्ते निभाना, पर किसी अत्याचार को सहना मत.' बेटियों को सिर्फ विदा मत कीजिए,

उन्हें इतना भरोसा भी दीजिए कि अगर दुनिया ठुकरा दे, तो उनका अपना घर अब भी उनका इंतज़ार कर रहा है.

क्लास by बड़े भाई

ओवरथिंकिंग हो तो यह करके देखें

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, एक रात मैं बैठा था, अचानक से एक विचार, न जाने कहाँ से आकर मेरी हालत ख़राब कर दी.. वह विचार था कि मैंने अच्छी खासी नौकरी छोड़कर लेखक बनने का काम चुना.. आगे चलकर लोग कविता कहानी नही सुने तो क्या होगा..? लोगों को बाद में नही पसंद आया तो क्या होगा..? मेरा पूरा जीवन बरबाद हो जाएगा.. मेरा खर्च कैसे चलेगा.. मेरा परिवार कैसे चलेगा.. कैसे जीवन बीतेगा..? और इसका एक पूरा चलचित्र मेरे दिमाग ने बनाना शुरू कर दिया.. मुझे सब दूर दूर तक दिख रहा था.. और उस दूर दूर तक मेरी नाकामी, मेरी असफलता, यही सब दिख रहा था यानी सब कुछ मात्र नकारात्मक..

इसने मेरे भीतर एक डर भर दिया और मैं इससे बचने और निबटने के उपाय ढूंढने लगा.. हालत ऐसी हो गयी कि मेरी भूख लग्न बंद हो गयी... किसी से बात करने का मन नही कर रहा था.. अपना आत्मविश्वास धराशायी हो चुका था.. मैं ओवेरथीनक कर रहा था.. आप भी इसी से जूझ रहे हैं.. आपका भी दिमाग नेगेटिव विचारों का अड्डा बन चुका है तो आज इसी से निबटने पर चर्चा करते हैं.

छोटे भाई, इससे पार पाने के लिए यह तीन बातें समझ लीजिए..मेरा निजी अनुभव रहा है, निश्चित तौर पर आपको भी मदद मिलेगी.

पहला - आपके पास टारगेट्स नही है, ड्रीम्स हैं..जब सपनों को कितने समय में और कैसे पूरा करेंगे तो वह टारगेट कहलाता है...जब वो नही होता है तो दिमाग बेचैनी पैदा करता है और फिर उससे बचने के उपाय खोजता है तो आपको एक टारगेट बनाना है

दूसरा - जो आप सोच रहे हैं उसके होने के चांस न के बराबर हैं, आपका अपना सबकुछ खत्म होता सा दिख रहा है यह सब पूरी तरह झूठ है, वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है..

तीसरा - सुबह शाम दो चार दोस्त बनाइए उनके साथ बैठिये गपशप करिए.. घूम कर आइये.. थोड़े दिन में सब ठीक हो जाएगा.

मैंने यही किया किया था और बिल्कुल ठीक हो गया था.. मुझपर नहरोस करके कुछ दिन यह करके देखिए.. आप भी बिल्कुल ठीक हो जाएंगे.. आपके भीतर की ऊर्जा जो कहीं अनियंत्रित विचारों की गिरफ्त में है, बाहर आ जाएगी.

और एक बात आपको बताऊं जब मुझे ऐसा हुआ था तब मुझे एक गीत याद आ गया था.. जो मैंने उस समय सुना था, शायद आपके भी काम आए..

होनी और अनहोनी की परवाह किसे है मेरी जान
हद से ज्यादा यही होगा, हम यहीं मर जायेंगे.

कविता

जेठ का महीना

डॉ. प्रज्ञा मिश्रा

पीपर की छैंयाँ कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।
रोटी कलेवा में नेनू सुहाए।
अंमियाँ की चटनी पुदीना बनाए।
मटका भर पानी तुरत रीत जाए।
गोरू तलैयन में डुबकी लगाए।
पीपर की छैंयाँ कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।
खेतन में खजरी पेड़ खाँ सजाए।
आम गिरे मूड़न पै बड़ो मन भाए।
दार-भात अथानों रुच- रुच खाए।
बिजौरे कचरियां स्वाद है बढाए।
पीपर की छैंयाँ कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।
सतुआ औ बिरचुन घोर के खबाए।
आम रस रोटी सबै खाँ सुहाए।
भरतो गकड़ियन को स्वाद न भुलाए।
ठंडई, जलजीरा पनो तो पिबाए।
पीपर की छैंयाँ कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी